पूरी दुनिया पर थोपी जा रही एकरूपता का कुछ इलाज सोचा जाना चाहिए

सांस्कृतिक बहुलता का संधान

गिरीश्वर मिश्र

आज सभी देश वैश्वीकरण की चपेट में हैं। इसकी हकीकत और आशय को अक्सर ठीक से नहीं समझा जाता है या फिर उसे बिना समझे नकार दिया जाता है। दूसरी ओर जो शक्ति और सत्ता से सम्पन्न हैं वे अपने ढंग से इसका लाभ उठाते रहते हैं और उपेक्षित, वंचित लोग शोषण के शिकार होते रहते हैं। यहां यह बात भी माननी पड़ेगी कि आज हमारा जीवन और हमारी नियति परस्पर निर्भर होती जा रही है। कोई अलग-थलग पड़ी अकेली घटना भी अपना असर सारी दुनिया में दिखाती है। परिस्थितियों की जटिलता ऐसा रूप ले रही है कि घटनाओं में कोई सीधा-सीधा कार्य-कारण सम्बन्ध खोजने की कोशिश बेमानी होती जा रही है।

डॉ. जावा जोशी की कृति

विचारधाराओं का संघर्ष

गौर करें तो यह बात साफ हो जायगी कि वैश्वीकरण के दौर में थोड़े से देशों के विचारों और कार्यों के प्रभुत्व के साथ आने वाली एकरूपता और स्वाभाविक रूप से मौजूद सांस्कृतिक बहुलता के बीच संघर्ष पैदा हो रहा है। यह संघर्ष बहुलता बनाम बाहर से आरोपित अस्मिताओं के बीच हो रहा है। एक समय था जब पूंजीवाद और साम्यवाद के बीच होड़ मची थी कि विश्व में कौन कहां तक दिग्विजय कर सकेगा। अब वैश्विक जमाने में प्रौद्योगिक, राजनीतिक, आर्थिक प्रयासों के बीच विचारधाराओं का संघर्ष इसलिए जारी है कि किस तरह एक विश्व व्यवस्था बने ताकि टिकाऊ एकरूपता स्थापित हो सके। इसमें आश्चर्य न होगा यदि व्यापक वैश्विक समाज पर अपना वर्चस्व स्थापित करने की चाह रखने वाले बहुलता को दबाना चाहें। वे तो सब पर अपनी निगरानी चाहते हैं। इस तरह की विचारधारा के सामने सांस्कृतिक बहुलता का विचार एक दुश्मन सरीखा ही लगता है।

आज सूचना संसाधन और प्रौद्योगिकी में

> विविधता जीवन का माध्यम और अभिव्यक्ति है। इससे अव्यवस्था तो होती है परंतु यह जीवन के लिए जरूरी भी है

हो रहे तीव्र विकास जीवन के सामाजिक, आर्थिक और नैतिक क्षेत्रों में बड़े असरदार ढंग से उपस्थित हो रहे हैं। सत्ता के लोगों लिए वे क्षमता बढ़ाने और एकरूपता के साथ अनुपालन के द्वारा विविधता पर नियंत्रण स्थापित करने में मददगार हो रहे हैं। ऐसे में व्यवस्था स्थापित करने के नाम पर सांस्कृतिक भिन्नता को कमी माना जाता है अतः उसे दूर कर एकरूपी दुनिया में शामिल करना जरूरी समझा जा रहा है। विविधता से अव्यवस्था तो होती है परंतु विविधता जीवन के लिए जरूरी भी है। एकरूपता की विचारधारा शक्ति और संपत्ति वालों के अधिकार को बढ़ाने की चाल है।

सांस्कृतिक विविधता एक विचारधारा है। हर विचारधारा वस्तुतः कुछ विश्वासों का पुंज होती है और जीवन-शैली, शासन प्रणाली और सामाजिक रचनाओं के लिए दृष्टि उपलब्ध कराती है। विचारधाराओं के तर्क और ऐतिहासिक आधार भी होते हैं। प्रतीकों, मिथकों और ऐतिहासिक घटनाओं के सहारे उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है। आज पूंजीवाद, साम्यवाद, समाजवाद, फासीवाद, नारीवाद, उदारवाद जैसी अनेक विचारधाराएं मौजूद हैं । इन्हें धर्म, विश्वास, नैतिकता और मीडिया के सहारे स्थापित किया जाता है। बहुसांस्कृतिकता विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक, सामुदायिक और सामाजिक विविधताओं को पहचानने और प्रोत्साहित करते हुए आगे बढ़ती है। इसमें विविधता का स्वीकार और स्वागत होता है। जब भिन्नता की स्वीकृति होती है तो पसंद, व्यवहार और विश्व दृष्टि में विकल्प दिखाई पड़ते हैं।

विविधवर्णी संस्कृति की अवधारणा की ओर हमारा ध्यान कम ही जाता है। संस्कृति के आरंभिक अध्ययन प्रायः उसे दूर-दराज के अनजान अलग-थलग पड़े समुदायों पर केंद्रित थे। लेकिन संस्कृति को अब संज्ञा और विशेषण के रूप में प्रयुक्त किया जा रहा है। गरीबी की संस्कृति तथा हिंसा की संस्कृति चर्चा में हैं। संस्कृति अब किसी समूह की पहचान मात्र के लिए नहीं रही। इसका आशय उन ऐतिहासिक, सामाजिक और नैतिक शक्तियों के जुड़ाव से है जो संस्था और व्यक्ति को परिभाषित करती है। चार-पांच दशकों में उपनिवेश का सत्य भी जाहिर हुआ। यह विचार भी उभरा कि सभ्यता निर्माण का रास्ता अनिवार्य रूप से उपनिवेश के पड़ाव से नहीं गुजरता है। यह भी अनुभव हुआ कि आक्रामक और शोषक की भूमिका में उपनिवेश बनाने वाला देश उपनिवेश के लोगों के मन, व्यवहार, समाज सब पर नियंत्रण और दमन स्थापित करता है। अब सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन की विविधता का सौंदर्य दृष्टि पथ में आने लगा है। संस्कृति को व्यक्ति और सामूहिक व्यवहार को गढ़ने वाला एक प्रमुख कारक स्वीकार किया जा रहा है। संस्कृति केवल नृविज्ञानियों की उत्सुकता का विषय मात्र नहीं है। वह सभी मनुष्यों में अंदर-बाहर व्याप्त है।

समावेशी सोच जरूरी

संस्कृति का अध्ययन और समझ अतीत, वर्तमान और भविष्य को ग्रहण करने और व्याख्या करने वाले सूत्र के रूप में प्रयुक्त हो रहा है। सांस्कृतिक बहुलता इतिहास की गलतियों को सुधारने का उपाय बन रही है। उपनिवेश सदैव मानसिक उपनिवेश ही होता है। पश्चिमीकरण की एकल विचारधारा आज के बदलते विश्व के लिए अनुपयुक्त है। सांस्कृतिक बहुलता सत्ता शक्ति के असंतुलन को रेखांकित करती है और नैतिकता और व्यवहार को समझने का नया रूप देती है। यह सामाजिक दशा में परिवर्तनकामी है। यह समावेशी है जो लोगों को शामिल करती है और उन्हें पहुंच तथा स्वीकृति दिलाती है। सत्ता, शक्ति और धन चाहने वाले एकरूपता चाहते हैं। वैश्वीकरण के दौरान विचारधाराओं के संघर्ष में बहुसांस्कृतिकता वैश्विकता की दृष्टि से एक उपयोगी विचारधारा प्रतीत होती है।

(लेखक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति हैं)